JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बीकानेर रियासत की ऐतिहासिक कलात्मक हवेलियों की समृद्ध भित्ति चित्र कला

डॉ. लता अग्रवाल

सह–आचार्य,(इतिहास)

स.पृ.चौ.राजकीय महाविद्यालय,अजमेर

ऋचा चौधरी,

शोधार्थी,इतिहास

म.द.स.विश्व.अजमेर

Email :ima.ajmer@gmail.com

शोध सार

राजस्थान की मौलिक परम्परागत संस्कृति के स्वरूप का निरूपण बीकानेर रियासत की लाल बलुआ पत्थर से निर्मित राष्ट्र की अनमोल धरोहर कलात्मक ऐतिहासिक इमारतेंः हवेलियों की समृद्धता भित्तिचित्र कला में परिलक्षित होती है। बीकानेर रियासत की ऐतिहासिक कलात्मक हवेलियों के समृद्ध राजपूत–मुगल कला संस्कृति के प्रतीक भित्ति चित्रों का चित्रांकन हवेलियों के मुख्य द्वार के कक्ष,मुख्य आंगन,बरामदा,तिबारी,कक्षों व छतों आदि की सभी बाहरी व अंदर की दीवारें पर विभिन्न सुनहरे,नीले,इंडिगो,हरे और मैरून रंगो से जटिल आकर्षक चित्रों से आच्छादित_भित्ति चित्रकलाएं राजपूताना की पौराणिक कथाओं,इतिहास और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।बीकानेर रियासत राजपूताना के उत्तर–पश्चिम में पसरे थार रेगिस्तान की रेतीली धरती मरूस्थल का हृदयस्थल शुष्क भौगोलिक स्थालाकृति में स्थित है। जहां समृद्ध धनी वणिक व्यापारियों द्वारा निर्मित हवाओं से अठखेलियां करती हुई आवासीय हवेलियाँ जो अपनी विशालता, ऊँचाई, विशाल आंगन व बरामदा अपने स्थापत्य कला के कलात्मक महीन लकड़ी से निर्मित दरवाजें,जालियां व उभारदार झरोखें पर की गई नक्काशी, कक्ष की छतों और भित्ति पर विभिन्न सुनहरी रंगों से उकेरी व चित्रित पारम्परिक सांस्कृतिक चित्रकलाएं आदि अपनी विशिष्टता के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेजीकरण की पहल को हवेलियों ने ही संरक्षित किया है। अपने मूल रूप में संरक्षित बीकानेर की हवेलियों के आकर्षक सांस्कृतिक मूल्य और इसकी उत्कृष्ट कला वस्तुतः प्रत्येक भित्ति चित्र में दृष्टिगत है।दीवारों और छतों पर चित्रित भित्तिचित्रों में स्थानीय आकर्षण व किंवदंतियों और हिंदू पौराणिक कथाओं के विशाल चित्रों तथा लघु चित्रों में शिकार व युद्ध के दृश्यों के साथ–साथ इनमें प्रकृति प्रेम, श्रृंगार और धार्मिक देवी–देवताओं व मान्यताओं से परिपूर्ण दृश्यों में सौन्दर्यता,मादकता और आध्यात्मिकता का समायोजन नायाब है।हवेली की दीवारों पर पेंटिग के माध्यम से उस समय में प्रचलित विविध रूपांकनों को दर्शाया गया है। नगर सेठो की धन खर्च करने की आस्था, समर्पण, सौन्दर्य परखने की क्षमता उनकी प्रेरणा आदि की छाप उनके द्वारा निर्मित हवेलियों पर स्पष्ट परिलक्षित होती है जो एकरूपता में विविधता प्रदान करती है।

मुख्य शब्द :बीकानेर, संस्कृति, हवेली , भित्तिचित्र कला, कलात्मक,

मानव की सृजनात्मक मनोभावाभिव्यक्ति को व्यक्त करने के उद्वेग की पूर्ति आवास स्थल की दीवारों पर तूलिका की मदद से रेखाओं व चित्रों को उकेरना प्रारम्भ कर दीवारों व छतों पर गेरू, खड़िया व अन्य रंगो से रेखाचित्र एवम् रंग भरना या खोद–खरोंचकर शैल चित्र बनाना अद्भूत था।धीरे–धीरे मानव व चित्रों का संबंध विस्तार लेने लगा और सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास में अपनी उपलब्धियों को रेखाओं,चित्रों व रंगो के द्वारा अलंकृत भित्तिचित्रों को राजा–महाराजाओं के संरक्षण में पोषित परम्परा के रूप में मन्दिरों,महलों,किलों और धनी वर्ग के राजसी आवास स्थल हवेलियों व सार्वजनिक स्थलों की दीवारों व छतों पर विशेष प्रश्रय प्राप्त हुआ। भित्तिचित्रों के मूल भावना की अभिव्यक्ति का विषय सामाजिक पर्वो सांस्कृतिक परम्पराओं– धार्मिक पौराणिक कथाओं और ऐतिहासिक दरबारों आदि की उपलब्धियों से संबंधित था। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के समय मुगल काल में राजपूताना के जांगल मरूस्थल के बीकानेर रियासत में भित्तिचित्रों की समृद्धकलात्मक परम्परा को सरलता–सहजता के साथ एक विशिष्ट महत्त्व व आकर्षण प्राप्त हुआ।[1]

राजस्थान के अर्द्धशुष्क भौगोलिक परिस्थितियों में अवस्थित बीकानेर का क्षेत्र पारंपरिक हवेलियों के असाधारण सांस्कृतिक मूल्यों और कलात्मक भित्तिचित्रों के कारण पर्यटन के आर्कषण का केन्द्र है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न वणिक धनी व्यापारियों और जमींदारों द्वारा निर्मित ये विरासत हवेलियों के बाहरी और अंदर की दीवारों को फ्रेस्को पेंटिग[2] से आकर्षित व खूबसूरती से चित्रित किया गया है,जो समाज की पारंपरिक रूप से समृद्ध कला,संस्कृति और विरासत को दर्शाता है।बीकानेर की हवेलियों की वास्तुकला और भित्ति चित्रकला का अनूठा विशिष्ट संयोजन है।

हवेलियों के भित्ति चित्रों में चित्रांकित प्रतीकात्मक रूप में महाराजा राव बीका का राज दरबार व बाज़ार के दृश्यों से प्रतीत होता है कि जोधपुर के संस्थापक राठौर वंश के राव जोधा के पुत्र राव बीका(1465–1504ई.) ने 1465 ई. में उत्तर–पश्चिम राजपूताना के उष्ण व शुष्क बंजर जांगल क्षेत्र में जिस राज्य की स्थापना की वह बीकानेर के नाम से जाना गया।[3] यहां की पारंपरिक हवेलियां यहां के समृद्ध व्यापारियों[4] के परिवार की पीढ़ियों के रहने के लिए एक **अलंकृत रूप से सुसज्जित राजसी आवास स्थल** के रूप में निर्मित की गईं थीं। मुख्य बाज़ार में स्थित पारंपरिक रामपुरिया की हवेली एक आंगन के चारों ओर बनाई गई हैं, जिसकी सभी पारिवारिक–सामाजिक–सांस्कृतिक–धार्मिक–व्यापारिक व अन्य गतिविधियां इस चौक या आंगन के चारों ओर घूमती है। इसके अतिरिक्त यहां का आंगन एक बल्ब की रोशनी (Light wale) के रूप में कार्य करता है और क्षेत्र के गर्म और शुष्क मौसम में घर को हवादार बनाता है।बीकानेर के धनी व्यापारी भंवरलाल रामपुरिया के कहने पर एक स्थानीय वास्तुकार बालूजी चाल्वा द्वारा दुलमेरा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित कलात्मक रामपुरिया हवेली में चित्रित भित्ति चित्र उत्कृष्टता और भव्यता के प्रतीक तथा राजपूताना के सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षक है। रामपुरिया, ढड्ढो, डागों, बैदों, रिखजी बागड़ी, पुनमचंद जी व भैंरोदान जी की हवेलियों के चित्रों में देवी–देवताओं,जानवरों, छत पर बादल,एरावत पर सवार इन्द्र, हवा में उड़ती खूबसूरत परियां, फूल–पत्तियां, यमुना नदी के किनारे का ताजमहल, ग्रामीण महिलाओं का कुएं से पानी भरना, राज महल,शाही पालकी की सवारी का दृश्य,ऊंट–बैल–हाथी–घोड़े पशु–पक्षी व पहाड़ आदि विभिन्न प्राकृतिक दृश्य ज्यामितीय आकृति के द्वारा कई चित्र गोल्डन वर्क द्वारा भी चित्रांकित किये गये है। वास्तुकला से परिपूर्ण व सौन्दर्यता के प्रतीक लकड़ी के दरवाजें व खिड़की की चौखटों पर नक्काशी कर उन्हें कलात्मक ढंग से तराशा गया है।[5]

भित्ति चित्रों की विषय–वस्तु[6] :

भित्ति चित्रकला मानव की स्वाभावित भावनाओं का क्रियात्मक विकास है। जो धार्मिक–सामाजिक जन जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर अवलंबित है। यह कला धनी व्यापारियों के द्वारा दिये गये प्रश्रय के प्रोत्साहन के स्वतंत्र एवं सौम्य गति से निरन्तर समृद्ध होती गई। जो अनन्त–निराकार धर्म और संस्कृति के विकास क्रम में चित्रकार ने सोंन्दर्य की जीवंत अभिव्यक्ति के द्वारा आध्यात्मिक–धार्मिक,लोकतांत्रिक,रहस्यवादी एवं परम्परागत सामाजिक संस्कारों को नवीन आयाम दिये। समाज में प्रचलित सांस्कृतिक पर्वो व धार्मिक उत्सवों का प्रतीकात्मक रेखांकन से धार्मिक अभिप्रायों को नवीन स्वरूप प्रदान किया गया। इनमें आकृति के साथ–साथ रेखांकन का महत्व अधिक प्रतीत होता है।चित्र कला की इस आदि पद्धति को विकसित और परिष्कृत करने में बीकानेर के धनी वणिक वर्ग के नगर सेठों की विशेष भूमिका रही।

राजपूताना में भित्ति चित्रांकन परम्परा के अद्यावधि ज्ञात सर्वाधिक उदाहरण शेखवाटी व बीकानेर क्षेत्र में उपलब्ध है।विषय वस्तु की दृष्टि से पौराणिक धार्मिक कथाओं और आख्यानों,लोक देवी– देवताओं ,पर्वो–त्यौहारों से सम्बद्ध धारणाएं, और उन धारणाओं से सम्बद्ध प्रतीक चिन्ह, सौन्दर्यबोध परक कलागत परिकल्पनाओं से सम्बद्ध प्रतीकात्मक आकृतियां,लोक विश्वास परक धारणाओं की कलापरक परिणितियों के साथ–साथ धार्मिक देवी–देवताओं में अलंकारों व चमकीले वस्त्रों से सज्जित रही। राधा– कृष्ण के श्रृंगाार दृश्यों का भावात्मकता स्वरूप विष्णु के कृष्ण के अवतार में कृष्ण का गोपियों के साथ रास लीला व अठखेलियां करना,झूला झूलना,गोपियों का तालाब में नहाना और कृष्ण का पेड़ पर बैठ कर उन्हें देखना,बाल रूप में शेष नाग पर खड़े होकर बांसुरी बजाना, अंगुली पर गोवर्धन पर्वत का उठाना आदि के परिष्कृत स्वरूप को शैलीबद्ध चित्रांकन कर उनमें उल्लास,उद्वेग व आनन्द के द्वारा अनेक गहरे और सूक्ष्म मनोभावों के अतिरेक को प्रकट किया गया है। रिद्धि–सिद्धि गणेश जी के चित्र पारंपरिक धार्मिक संस्कारों में अन्तर्निहित संपूर्ण भावाभिव्यक्ति की प्रक्रिया से अनुप्राणित प्रतीत होती है। शिकार के प्रसंगों के साथ–साथ प्राकृतिक दृश्यों में नदी,तालाब,झरने व अन्य पहाड़,पशु–पक्षी, हाथी,घोडे,ऊंट,बैल–गाय व अन्य जानवर तथा स्वच्छंद वातावरण आदि के साथ प्राकृतिक दृश्यो में पेड़– पौधे,पहाड़, नदियां– झरने, फूल की पंखुड़ियों व पत्तियों, बेल–बूटों गुलदस्तों तितली व भवरों की बारीक –महिन रेखाओं को विभिन्न लाल,गहरा व हल्का नीला,पीला–नारंगी,काला,हरा व मैरून रंगो से चित्रित भित्ति चित्रण परम्परा का समृद्ध स्वरूप नवीन व सजीव परिलक्षित होता है। भावात्मकता और सामंजस्यता बीकानेर के भित्ति चित्र कला की मौलिक विशेषता है।चित्रकारों ने यथार्थवादी, धार्मिक या प्राकृतिक चित्रों की प्रस्तुतियों को पारम्परिक आनुपातिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

हवेलियों का प्रमुख केन्द्र विशाल आँगन जिसके चारों ओर तरतीबदार बरामदे है जिन पर अनेक सुसज्जित कक्ष बने होते है। कक्षों की बाल्कनी और झरोखें आँगन की तरफ खुलते है। आँगन अतिथि सत्कार, सामूहिक रूप से पुरूषों का चौपड़ खेलना और सांस्कृतिक मनोरंजन का प्रमुख स्थान होता है।

भित्ति चित्रों की चित्रांकन पद्धति[7] : बीकानेर के भित्ति चित्रण का प्रारम्भ जयपुर की आलागीला पद्धति के साथ इतालवी की म्यूरल या फ्रेस्को पद्धति के अन्तर्गत सर्वप्रथम चित्रांकन के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण कर उसके बाद रेखांकन और फिर आलागीला पृष्ठभूमि में ही रंगो का भराव कर सूखने के बाद विभिन्न तरीकों से स्थाई बनाने का कार्य किया जाता है।इनके स्थायित्व और चित्रकारों की कलाकारी की सटीक अभिव्यक्ति है।

भित्ति चित्रण की तकनीकी : जिस दीवार पर चित्रांकन किया जाना है उस पर भित्ति चित्रों के लिए जो पृष्ठभूमि तैयार की जाती थी उसमें दीवार की पपड़ियों,लेवड़ो को पहले उखाड़ कर उस दीवार पर चूना लगाकर

फिर गाढ़ा चूने का प्लास्तर लगाकर उसकी मस्तर से घुटाई की जाती थी। यह कार्य प्रायः बरसात के मौसम में किया जाता था फिर 4–5 माह के भीतर सर्दी के मौसम में चित्रण कार्य किया जाता था।चित्रण से पूर्व दीवार में गीले कपड़ो से नमी दी जाती थी। पानी के छिड़कने पर जब बूंद दीवार पर ठहरने लगे तब दीवार को चित्रण के अनुकूल माना जाता था। चित्रकार आकृति की परिकल्पना की पृष्ठभूमि को निश्चित् व निर्धारित कर बाहरी रूप से रेखांकित कर खाका तैयार किया जाता था फिर चित्रों के निर्माण में मुख्य रंग–पीली मिट्टी,हरा पत्थर,हींगलू,काला कोयला,देशी नील आदि को घोट–घोट कर उससे भित्ति पर मनमोहक चित्र का चित्रण किया जाता था दूसरी तकनीक में सूखी दीवार पर चित्र का अंकन किया जाता था।जो चित्रकार के अथक परिश्रम का परिणाम होता था।

भित्ति चित्रों की रचना में रंगो का समायोजन[8] : भित्तिचित्रों की रचना में प्रमुखतया विशुद्ध खनिज रंगो में पीला,लाल,नीला,हरा, नारंगी, काला और सिंदूरी रंग आदि की प्रधानता से प्रयोग किया गया है। धरातल पर बनाये जाने वाले चित्र की आकृति को पीले अथवा गेरू रंग से बाह्य सीमा रेखा का अंकन किया जाता है और उसके बाद रंगो के सपाट प्रयोग द्वारा आकृति को रूपायित कर रंगो का समायोजन किया जाता है। इसके पश्चात् चित्र रचना से सम्बद्ध अलंकरणात्मक अंकन और आवश्यकतानुसार चित्र की संपूर्ति कर लेने के बाद अंत में हल्के भूरे या काले रंग की स्थूल रेखाओं से आकृतियों को उनके प्रत्यंगत स्वरूप बांधा जाता है। लाल रंग से घिसाई कर चित्रों को चमकाया जाता था।

इस प्रकार में मंदिरों,राजा–महाराजाओं की छतरियों, गौशालाओं,धर्मशालाओं,बावड़ियों– कुओं व हवेलियों की दीवारों– छतों को चित्रों से चित्रांकित किया जाने लगा।

उस्ता कला[9] :

बीकानेर के महाराजा रायसिंह(1574–1612ई.) के मुगल सम्राट अकबर से हुए संबंधों ने सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ किया। महाराजा रायसिंह ने आगरा की मुगलकालीन इमारतों की भित्तियों पर की गई सुनहरी चित्रकारी व पत्थरों पर की गई नक़्काशी से आकर्षित होकर मध्य एशिया की उस्ता जाति के कलाकार उस्ता अली रज़ा,उस्ता हामिद,उस्ता रूक़्नुदीन,उस्ता मुहम्मद लुत्फ,उस्ता नूर मौहम्द,उस्ता गुलू आदि को बीकानेर राज्य में आश्रय दिया।वणिक वर्ग द्वारा निर्मित हवेलियों में इन्हीं उस्ता जाति की भावी पीढ़ी ने विभिन्न शैलियों–(1) उभारदार कला(मनोवत)– इसके माध्यम से दीवारों,छतों, मेहराबों और स्तम्भों पर चित्रों की आकृति को उभारने के बाद फिर पक्का रंग दिया जाता था। चित्र पर सोने का बर्क लगाकर बारीक काम किया जाता था।(2)सोनकिन कला– दीवार और छतों पर सफेद रंग करने के बाद उस पर फूल–पत्तियों की आकृति देकर मीनाकारी का कार्य सम्पादित किया जाता था।(3) तांतला सुनहरी–सुनहरी पृष्ठभूमि की दीवार में सफेद फूल–पत्तियां या बंलबूटे के चित्र बनाये जाते थे।(4)रंगबेज़ी कला– सफेद पृष्ठभूमि में चित्रित चित्रों में विभिन्न रंगों से शेड देना और आवश्यकतानुसार लघु मानव चित्र भी चित्रित किये गये।(5) सुनहरी नक़्क़ाशी मीना– इसके तहत फूल–पत्तियों में विभिन्न मनमोहक रंग भरे जाते थे।(6)ताराबंदी– गीले चमकीले रंगो की पृष्ठभूमि में चित्रित फूल–पत्तियाँ आकाश के तारों की तरह चमकती हुई नज़र आती थी।(7)लघु चित्र शैली– जिसके अन्तर्गत काग़ज़ अथवा अन्य वस्तुओं पर गणगौर,पनघट,राधा– कृष्ण,पशु–पक्षी,ढोला–मारू,राजा–बादशाह,राजा–रानी,प्राकृतिक परिदृश्य, दो सांड़ो की लड़ाई आदि यथार्थ व प्रकृति के चित्र बारीक कलम से बहुत ही कौशलता से चित्रित किये किये गये थे।(8) व्यक्ति के छवि की कलात्मक अभिव्यक्ति(Portrait painting) व्यक्ति का चेहरा देखकर उसकी छवि या फोटो बना देना एक कला कौशल था।

बीकानेर की हवेलियों के भित्ति चित्रों में उस्ता कलां ने सभी शैलियों में पारम्परिक रूप में चित्रों को उभार देकर नये आयाम दिये–महाराजाओं के चेहरे पर ओजस्वता,वीरता,शारीरिक सौष्ठव,पोशाक तथा महारानियों की आकर्षक मुखाकृति पर तीक्ष्ण नयन,लम्बी नाक,नुकीली या गोल ठुड्डी,रसीले होंठ,उभरे हुए कपोल,लम्बी गर्दन, गठीला बदन आदि स्वर्ण चमकते अलंकारों से युक्त व पारम्परिक चमकती पोशाक आदि चित्र प्रमुख थे।

आलागीला कला[10] : चूनगर जाति के कलाकारों की पुश्तैनी भित्ति चित्रकला का स्वरूप पारम्पिरिक कला आलागीला कला थी। जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम दीवार या छत के जिस हिस्से पर चित्र बनाना होता है उस हिस्से को गीले चूने की कली(Lime Paste) से पोतकर उस ताजा गीले प्लास्टर पर बारीक कलम से वाटर रंग से विविधता व विशिष्टता से सौन्दर्य से परिपूर्ण चित्र बनाकर आकर्षक रंग–संयोजन व लकीरो का संतुलन के द्वारा भित्तिचित्रों को आकार दिया जाता था। धूप,बारिश,आँधी व तूफान आने पर भी चित्र और रंग बरकरार रहते थे।

बीकानेर की कलात्मक दृष्टिकोण से ऐतिहासिक हवेलियों में भित्ति चित्रों का चित्रांकन,पत्थरों की नक़्काशी,विभिन्न कलात्मक भित्ति चित्रों पर महीन कलम का सुनहरी कार्य,रंगों का संयोजन,लकड़ी पर सुन्दर खुदाई और अपने स्थापत्य कला की भव्य अनूठी इमारतों में सम्पूर्ण सामाजिक व सांस्कृतिक समृद्धता परिलक्षित होती है। बीकानेर के उत्साही संरक्षकों और वणिक धनी व्यापारी वर्ग के कारण यह कला उत्तरोत्तर समृद्ध होती गई।

सन्दर्भ :

1. व्यास, बृजकिशोर (1965), मुगल– बीकानेर संबंध, राजहंस प्रेस, दिल्ली,पृष्ठ 165–66
2. इतालवी पद्धति हवेलियों के भित्तिचित्रों के चित्रांकन के लिए दीवारों और कक्षों व गुम्बदों की छतों पर चूने के पेस्ट से की गई परतों को रंगों की अंतिम परत के बाद लगाया जाता था।फ्रेस्को यह एक प्राचीन पारंपरिक माध्यम है जो प्रागैतिहासिक गुफा भित्ति सजावट से प्रारम्भ की गई।
3. व्यास,पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 167
4. राजपूताना रेजीडेन्सी फाईल,न0 179–05,बीकानेर पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल डब्ल्यू. एच. एम स्टेवेयर द्वारा वायसरॉय लार्ड मिंटो को 14 दिसम्बर,1906 को बीकानेर की रामपुरिया हवेली के संबंध में लिखा लेख।
   बीकानेर एशिया के प्रसिद्ध सिल्क मार्ग पर स्थित होने तथा महाराजा दरबार के प्रोत्साहन से धनी वणिक वर्ग ने यहां अपने परिवार के साथ रहने के लिए जो राजसी आवासीय घर बसाए वे हवेलियां कहलाई। जो वणिक वर्ग की जीवन शैली का प्रतीक बन गई।जिसके भित्तिचित्रों में मुगल–राजपूत शैली का अद्भुत मिश्रण रहा।
5. प्रभात (साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र),जयपुर, 5 नवम्बर,1982,आलेख–शिवस्वरूप अग्रवाल,बीकानेर की स्थापत्य व भित्तिचित्र कला का स्वरूप,पृष्ठ 4
6. वैष्णव, रामसिंह(1989),राजस्थानः संस्कृति और कला,हंस प्रकाशन,जयपुर,पृष्ठ72
7. उपर्युक्त,पृष्ठ 73
8. उपर्युक्त,पृष्ठ 74
9. https://en,m,wikipedia,org>wiki
10. वैष्णव, पूर्व उद्धृत,पृष्ठ 74